1. अपठित बोध

(क) अपठित गद्यांश

1. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए

सुचरित्र के दो सशक्त स्तंभ हैं - प्रथम सुसंस्कार और द्वितीय सत्संगति। सुसंस्कार भी पूर्व जीवन की सत्संगति व सत्कर्मों की अर्जित संपत्ति है और सत्संगति वर्तमान जीवन की दुर्लभ विभूति है। जिस प्रकार कुधातु की कठोरता और कालिख पारस के स्पर्श मात्र से कोमलता और कमनीयता में बदल जाती है, ठीक उसी प्रकार कुमार्गी का कालुष्य सत्संगति से स्वर्णिम आभा में परिवर्तित हो जाता है। सतत् सत्संगति से विचारों को नई दिशा मिलती है और अच्छे विचार मनुष्य को अच्छे कार्यों में प्रेरित करते हैं | परिणामतः सुचरित्र का निर्माण होता है । आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने लिखा है - महाकवि टैगोर के पास बैठने मात्र से ऐसा प्रतीत होता था, मानो भीतर का देवता जाग गया हो । वस्तुतः चरित्र से ही जीवन की सार्थकता है चरित्रवान व्यक्ति समाज की शोभा है, शक्ति है । सुचरित्र से व्यक्ति ही नहीं, समाज भी सुवासित होता है और इस सुवास से राष्ट्र यशस्वी बनता है । विदुर जी की उक्ति अक्षरत: सत्य है कि सुचरित्र के बीज हमें भले ही वंश परंपरा से प्राप्त हो सकते हैं, पर चरित्र - निर्माण व्यक्ति के अपने बलबूते पर निर्भर है |

आनुवंशिक परंपरा, परिवेश और परिस्थिति उसे केवल प्रेरणा दे सकते हैं, पर उसका अर्जन नहीं कर सकते, वह व्यक्ति को उत्तराधिकार में प्राप्त नहीं होता । व्यक्ति विशेष के शिथिल-चरित्र होने से पूरे राष्ट्र पर चरित्र संकट उपस्थित हो जाता है, क्योंकि व्यक्ति पूरे राष्ट्र का एक घटक है । अनेक व्यक्तियों से मिलकर एक परिवार, अनेक परिवारों से एक कुल, अनेक कुलों से एक जाति या समाज और अनेकानेक जातियों और समाज समुदायों से मिलकर ही एक राष्ट्र बनता है ।

प्रश्न :-

1. सुचरित्र के दो सशक्त स्तम्भ किन्हें माना गया है ?

(क) सत्संगति व सत्कर्म

(ख) सुसंस्कार-सत्संगति

(ग) सत्कर्म व संपत्ति

(घ) चिरित्र व संपत्ति

2. सुसंस्कार क्या है ?

(क) पूर्व जीवन की सत्संगति व सत्कर्मों की अर्जित संपत्ति

(ख) वर्तमान जीवन की दुर्लभ विभूति

(ग) कुमार्गी का कालुष्य सत्संगति

(घ) विचारों को नई दिशा

3. **चरित्रवान व्यक्ति समाज के लिए क्या है ?**

(क) शोभा और शक्ति (ख) चरित्र और संपत्ति

(ग) कुमार्गी और कालुष्य (घ) संकट और समस्या

4. विदुर जी की कौन - सी उक्ति अक्षरत: सत्य है ?

(क) महाकवि टैगोर के पास बैठने मात्र से ऐसा प्रतीत होता था, मानो भीतर का देवता जाग गया हो |

(ख) सतत् सत्संगति से विचारों को नई दिशा मिलती है और अच्छे विचार मनुष्य को अच्छे कार्यों में प्रेरित करते हैं |

(ग) सुचरित्र के बीज हमें भले ही वंश परंपरा से प्राप्त हो सकते हैं, पर चरित्र- निर्माण व्यक्ति के अपने बलबूते पर निर्भर है |

(घ) व्यक्ति-विशेष के शिथिल चरित्र होने से पूरे राष्ट्र पर चरित्र संकट उपस्थित हो जाता है, क्योंकि व्यक्ति पूरे राष्ट्र का एक घटक है ।

5. राष्ट्र पर चरित्र संकट-कब उपस्थित हो जाता है ?

(क) व्यक्ति विशेष के शिथिल चरित्र होने से

(ख) अनेक व्यक्तियों से मिलकर एक साथ रहने से

(ग) समाज समुदायों से मिलकर रहने से

(घ) सतत सत्संगति से विचारों से

उत्तर - 1. (ख) 2. (क) 3. (क) 4. (ग) 5. (क)

2. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

हम पृथ्वी से केवल लेते हैं, उसे वापस कुछ नहीं लौटाते | प्रकृति एक पूर्ण चक्र है– एक हाथ से लो, तो दूसरे हाथ से दो | इस वर्तुल को तोड़ना नहीं है | लेकिन हम यही कर रहे हैं- सिर्फ लिए चले जा रहे हैं | इसीलिए सारे स्रोत सूखते जा रहे हैं | धरती विषाक्त होती जा रही है | नदियाँ प्रदूषित हो रही हैं, तालाब मर रहे हैं | हम पृथ्वी से अपना रिश्ता इस तरह से बिगाड़ रहे हैं कि भविष्य में इस पर रह नहीं पाएंगे |

आधुनिक विज्ञान का रवैया जीतने वाला है | वह सोचता है कि धरती और आकाश से दोस्ती कैसी ? उस पर तो बस फतह हासिल करनी है | हमने कुदरत का एक करिश्मा तोड़ा, किसी नदी का मुहाना मोड़ दिया, किसी पहाड़ का कुछ हिस्सा काट लिया, किसी प्रयोगशाला में दो-चार बूँद बना लिया और बस प्रकृति पर विजय हासिल कर ली |

पर्यावरण का अर्थ है- सम्पूर्ण का विचार करना | भारतीय मनीषा हमेशा 'पूर्ण' का विचार करती है | पूर्णता का अहसास ही पर्यावरण है | सीमित दृष्टि पूर्णता का विचार नहीं कर सकती | एक बढ़ई सिर्फ पेड़ के बारे में सोचता है | उसे लकड़ी की जानकारी है, पेड़ की और उपयोगिता मालूम नहीं है | वे किस तरह बादलों को और बारिश को आकर्षित करते हैं | वे किस तरह मिट्टी को बाँधकर रखते हैं |

उसे तो अपनी लकड़ी से मतलब है | वैसी ही सीमित सोच लेकर हम अपने जंगलों को काटते चले गए और अब भुगत रहे हैं | अब ऑक्सीजन की कमी महसूस हो रही है | वृक्ष न होने से पूरा वातावरण ही अस्त-व्यस्त होता जा रहा है | मौसम का क्रम बदलने लगा है और फेफड़ों की बीमारियाँ बढ़ती जा रही हैं |

प्रश्न-:

1. **इस गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक हो सकता है:-**

(क) पृथ्वी का महत्त्व

(ख) प्राकृतिक स्रोत

(ग) पर्यावरण और मनुष्य

(घ) ऑक्सीजन की कमी

2. **प्रकृति को चक्र कहा गया है,क्योंकि:-**

(क) यह घूमती रहती है

(ख) हम इससे जो लेते हैं, वही लौटाना पड़ता है

(ग) मौसम एक क्रम से चलते हैं

(घ) इसका आकार एक वर्तुल जैसा है

3. **आधुनिक विज्ञान और बढ़ई में क्या समानता है ?**

(क) दोनों पेड़ के बारे में सोचते हैं

(ख) दोनों वातावरण का ध्यान रखते हैं

(ग) दोनों सम्पूर्ण का विचार करते हैं

(घ) दोनों का दृष्टिकोण सीमित है

4. **आधुनिक विज्ञान का रवैया कैसा है ?**

(क) प्रकृति को जीतने का

(ख) प्रकृति से तालमेल करने का

(ग) प्रकृति का करिश्मा तोड़ने का

(घ) प्रयोगशाला में निर्माण करने का

5. **"पर्यावरण" शब्द में उपसर्ग और मूल शब्द का सही विकल्प चुनिए :**

(क) पर्या + आवरण

(ख) पर + आवरण

(ग) परि + आवरण

(घ) परी +आ +वरण

उत्तर 1. (ग) 2. (ख) 3. (घ) 4. (क) 5. (ग)

3. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

मनुष्य के जीवन में लक्ष्य का होना बहुत आवश्यक है । लक्ष्य के बिना जीवन दिशाहीन तथा व्यर्थ ही है । एक बार एक दिशाहीन युवा आगे बढ़े जा रहा था, राह में महात्मा जी की कुटिया देख रूककर महात्मा जी से पूछने लगा कि यह रास्ता कहाँ जाता है ? महात्मा जी ने पूछा तुम कहाँ जाना चाहते हो ? युवक ने कहा - "मैं नहीं जानता मुझे कहाँ जाना है ? महात्मा जी ने कहा जब तुम्हें पता ही नहीं है कि तुम्हें कहाँ जाना है ? तो यह रास्ता कहीं भी जाए, इससे तुम्हें क्या फ़र्क पड़ेगा | कहने का मतलब है कि बिना लक्ष्य के जीवन में इधर-उधर भटकते रहिए, कुछ भी प्राप्त नहीं कर पाओगे | यदि कुछ करना चाहते हो तो पहले अपना एक लक्ष्य बनाओ और उस पर कार्य करो | अपनी राह स्वंय बनाओ | वास्तव में जीवन उसी का सार्थक है जिसमें परिस्थितियों को बदलने का साहस है |

गाँधीजी कहते थे कुछ न करने से अच्छा है, कुछ करना । जो कुछ करता है वही सफल-असफल होता है | हमारा लक्ष्य कुछ भी हो सकता है, क्योंकि हर इंसान की अपनी-अपनी क्षमता होती है और उसी के अनुसार वह लक्ष्य निर्धारित करता है | जैसे विद्यार्थी का लक्ष्य है सर्वाधिक अंक प्राप्त करना, तो नौकरी करने वालों का लक्ष्य होगा पदोन्नति प्राप्त करना । इसी तरह किसी महिला का लक्ष्य आत्मनिर्भर होना हो सकता है । ऐसा मानना है कि हर मनुष्य को बड़ा लक्ष्य बनाना चाहिए किन्तु बड़े लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए छोटे-छोटे लक्ष्य बनाने चहिए | जब हम छोटे लक्ष्य प्राप्त कर लेते हैं तो बड़े लक्ष्य को प्राप्त करने का हममें आत्मविश्वास आ जाता है |

स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि जीवन में एक ही लक्ष्य बनाओ और दिन-रात उसी के बारे में सोचो, स्वप्न में भी तुम्हें लक्ष्य दिखाई देना चाहिए, उसे पूरा करने की एक धुन सवार हो जानी चाहिए | बस सफलता आपको मिली ही समझो | सच तो यह है कि जब आप कोई काम करते हैं तो यह जरूरी नहीं है कि सफलता मिले ही लेकिन असफलता से भी घबराना नहीं चाहिए | इस बारे में स्वामी विवेकानंद जी कहते हैं कि हज़ार बार प्रयास करने के बाद भी यदि आप हार कर गिर पड़ें तो एक बार पुनः उठें और प्रयास करें | हमें लक्ष्य प्राप्ति तक स्वंय पर विश्वास रखना चाहिए |

प्रश्न-:

1. मनुष्य का जीवन किसके बिना दिशाहीन और व्यर्थ है ?
   (क) लक्ष्य के बिना (ग) धन के बिना
   (ख) विद्या के बिना (घ) सुख के बिना
2. दिशाहीन युवा ने महात्मा से क्या पूछा ?
   (क) यह रास्ता कहाँ जाता है ?
   (ख) तुम कहाँ जाना चाहते हो ?
   (ग) आप कौन हो ?
   (घ) तुम कहाँ रहते हो ?
3. गाँधीजी क्या कहते थे ?
   (क) कुछ न करने से अच्छा है, कुछ करना |
   (ख) पहले प्रयास करो |

(ग) मैं नहीं जानता मुझे कहाँ जाना है ?

(घ) पढ़ा-लिखा होना बहुत आवश्यक है |

4. किसी महिला का क्या लक्ष्य हो सकता है ?

(क) पदोन्नति प्राप्त करना (ख) सर्वाधिक अंक प्राप्त करना

(ग) आत्मनिर्भर होना (घ) घर बनाना

5. दिन-रात में कौन सा समास है ?

(क) कर्मधारय समास (ख) द्विगु समास

(ग) द्वंद्व समास (घ) तत्पुरुष समास

उत्तर 1- (क) 2- (क) 3- (क) 4- (ग) 5- (ग)

4. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

डॉ. कलाम दृढ़ इच्छाशक्ति वाले वैज्ञानिक थे । वे भारत को विकसित देश बनाने का सपना संजोए हुए थे । उनका मानना था कि भारतवासियों को व्यापक दृष्टि से सोचना चाहिए । हमें सपने देखने चाहिए | सपनों को विचारों में बदलना चाहिए | विचारों को कार्यवाही के माध्यम से हकीकत में बदलना चाहिए । डा. कलाम तीसरे ऐसे वैज्ञानिक हैं, जिन्हें भारत का सर्वोच्च सम्मान तथा पद्मभूषण दिया गया | उन्हें भारत रत्न से भी सम्मानित किया गया | भारत को उन पर गर्व है | इतनी उपलब्धियाँ प्राप्त करने के बावजूद अहंकार कलाम जी को छू तक नहीं पाया | वे सहज स्वभाव के भावुक व्यक्ति थे | उन्हें कविताएँ लिखना, वीणा बजाना तथा बच्चों के साथ रहना पसंद था | वे सादा जीवन उच्च विचार में विश्वास रखते थे | कलाम साहब का जीवन हम सभी के लिए प्रेरणादायक है । कलाम जी तपस्या और कर्मठता की प्रतिमूर्ति हैं । राष्ट्रपति पद की शपथ लेते समय दिए गए भाषण में उन्होंने कबीरदास जी के इस दोहे का उल्लेख किया था- “काल करे सो आज कर आज करे सो अब |”

प्रश्न-:

1. डॉ. कलाम ने भारत को क्या बनाने का सपना देखा है ?

(क) अल्पविकसित देश (ख) विकसित देश

(ग) निर्मित देश (घ) विकासशील देश

2. डॉ. कलाम किस प्रवृत्ति के थे ?

(क) असहज (ख) दयालु

(ग) भावुक (घ) क्रूर

3. डॉ कलाम एक दृढ़ इच्छा शक्ति वाले .... थे |

(क) वैज्ञानिक

(ख) साहित्यकार

(ग) कलाकार

(घ) इनमें से कोई नहीं

4. डॉ. कलाम को क्या बेहद पसंद था ?

(क) कविताएँ लिखना (ख) वीणा बजाना

(ग) बच्चों के साथ रहना (घ) इनमें से सभी

5. डॉ. कलाम को किन सम्मानों से सम्मानित किया गया ?

(क) भारत रत्न

(ख) पद्मभूषम

(ग) पद्मविभूषण

(घ) उपर्युक्त सभी

उत्तर 1. (ख) 2. (ग) 3. (क) 4. (घ) 5. (घ)

5. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

बातचीत करते समय हमें शब्दों के चयन पर विशेष ध्यान देना चाहिए, क्योंकि सम्मानजनक शब्द व्यक्ति को उदात्त एवं महान बनाते हैं । बातचीत को सुगम एवं प्रभावशाली बनाने के लिए सदैव प्रचलित भाषा का ही प्रयोग करना चाहिए । अत्यंत साहित्यिक एवं क्लिष्ट भाषा के प्रयोग से कहीं ऐसा न हो कि हमारा व्यक्तित्व चोट खा जाए । बातचीत में केवल विचारों का ही आदान-प्रदान नहीं होता, बल्कि व्यक्तित्व का भी आदान-प्रदान होता है । अतः शिक्षक वर्ग को शब्दों का चयन सोच-समझकर करना चाहिए । शिक्षक वास्तव में एक अच्छा अभिनेता होता है, जो अपने व्यक्तित्व, शैली, बोलचाल और हावभाव से विद्यार्थियों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करता है और उन पर अपनी छाप छोड़ता है ।

प्रश्न -

1. शिक्षक होता है -

(क) राजनेता (ख) साहित्यकार

(ग) अभिनेता (घ) कवि

2. बातचीत में किस प्रकार की भाषा का प्रयोग करना चाहिए ?

(क) अप्रचलित (ख) प्रचलित

(ग) क्लिष्ट (घ) रहस्यमयी

3. शिक्षक वर्ग को बोलना चाहिए ?

(क) सोच-समझकर (ख) ज्यादा

(ग) बिना सोचे-समझे (घ) तुरंत

4. बातचीत में आदान-प्रदान होता है -

(क) केवल विचारों का (ख) केवल भाषा का

(ग) केवल व्यक्तित्व का (घ) विचारों एवं व्यक्तित्व का

5. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक है -

(क) किताबी भाषा

(ख) शब्दों का चयन

(ग) साहित्यिक भाषा

(घ) व्यक्तित्व का प्रभाव

उत्तर- 1. (ग) 2. (ख) 3. (क) 4. (घ) 5. (ख)

6. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़करगद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

लोक सेवा से जहाँ समाज का हित होता है, वहाँ मानव का व्यक्तित्व उभरता है | जो निःस्वार्थ भाव से दीन-दुखियों की सेवा करते हैं, वे ही लोकप्रिय बनते हैं | महात्मा ईसा ने कहा है कि महान वही व्यक्ति होता है, जो समाज का महान सेवक होता है | व्यक्ति समाज के लिए आत्मबलिदान करता है, समाज उसे अमर बना देता है | लोक सेवा से मनुष्य की सबसे बड़ी आकांक्षा पूर्ण होती है, वह है - यश एवं कीर्ति का उपार्जन | इसके प्राप्त होने पर मानव कीर्तिमान और अमर होता है | एक बार महर्षि दधीचि प्रार्थना कर रहे थे - हे ईश्वर तू मुझे ऐसे स्थान पर मृत्यु दे जहाँ मनुष्य सरलता से न पहुँच सके, जिससे कि मेरा शरीर जंगली पशु-पक्षियों का आहार बन सके | मैं अपने जीवन काल में किसी का उपकार न कर सका, तो मरने पर तो चील-कौओं का आहार बन सकूँ | "वे इस प्रकार से सोच ही रहे थे कि उसी समय कुछ देवता उनके पास आए और महर्षि से कुछ माँगा | ऋषि ने उत्तर दिया, "अगर मेरे शरीर से आप लोगों का कुछ हित हो सकता है, तो मैं उसे देने को सहर्ष तैयार हूँ |" देवताओं ने उनके शरीर की हड्डियाँ माँग लीं, ताकि उनसे वज्र बनाकर वे असुरों का संहार कर सकें और प्रजा को असुरों के अत्याचारों से मुक्त कर सकें | ऋषि ने तुरंत प्राण त्याग दिए और देवता उनके अस्थि पंजर को ले गए |

1. लोकप्रिय बनने का आधार है -

(क) दीन-दुखियों को कष्ट देना

(ख) निःस्वार्थ भाव से दीन-दुखियों की सेवा करना

(ग) व्यक्तित्व का निखार

(घ) समाज का हित न करना

2. लोक सेवा से जो आकांक्षा पूर्ण होती है, वह है -

(क) यश एवं कीर्ति

(ख) अमरत्व

(ग) यश एवं व्यक्तित्व विकास

(घ) कीर्ति एवं महान बनना

3. महर्षि दधीचि क्या प्रार्थना कर रहे थे ?

(क) अमरत्व के वरदान की

(ख) जीवनभर परोपकार न करने की

(ग) जीवनभर सबके साथ रहने की

(घ) मृत्यु के बाद भी परोपकार करने की

4. देवताओं ने महर्षि से क्या माँगा ?

(क) शरीर की हड्डियाँ

(ख) पशु-पक्षियों के लिए आहार

(ग) विजय का वरदान

(घ) अमरत्व का वारदान

5. देवताओं ने महर्षि से प्राप्त वस्तु का क्या उपयोग किया ?

(क) सुरों का संहार किया

(ख) अमरता प्राप्त की

(ग) असुरों का संहार किया

(घ) असुरों का साथ दिया

उत्तर - 1. (ख) 2. (क) 3. (घ) 4. (क) 5. (ग)

(ख) अपठित पद्यांश

1. नीचे लिखे अपठित काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के सही उत्तर चुनकर लिखिए -

आज की दुनिया विचित्र, नवीन;
प्रकृति पर सर्वत्र है विजयी पुरुष आसीन ।
हैं बँधे नर के करों में वारि, विद्युत्, भाप,
हुक्म पर चढ़ता-उतरता है पवन का ताप ।
है नहीं बाकी कहीं व्यवधान,
लाँघ सकता नर सरित्, गिरि,सिंधु एक समान ।
प्रकृति के सब तत्व करते हैं मनुज के कार्य;
मानते हैं हुक्म मानव का महा वरुणेश,
और करता शब्दगुण अंबर वहन संदेश ।
नव्य नर की मुष्टि में विकराल,
हैं सिमटते जा रहे प्रत्येक क्षण विकराल ।

यह प्रगति निस्सीम ! नर का यह अपूर्व विकास
चरण !तल भूगोल मुट्ठी में निखिल आकाश
किंतु , है बढ़ता गया मस्तिष्क ही निःशेष,
शीश पर आदेश कर अवधार्य,
छूट पर पीछे गया है रह हृदय का देश;
मोम-सी कोई मुलायम चीज़
ताप पाकर जो उठे मन में पसीज-पसीज ।

(1) कवि को आज की दुनिया विचित्र और नवीन क्यों लग रही है ?

(क) क्योंकि आज मानव ने सभी क्षेत्रों पर विजय प्राप्त की है ।

(ख) क्योंकि आज मानव ने किसी क्षेत्र में विजय प्राप्त नहीं की है ।

(ग) क्योंकि आज मानव को कहीं रूकावट नहीं है ।

(घ) इनमें से कोई नहीं ।

(2) 'हैं नहीं बाकी कहीं व्यवधान' के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है ?

(क) अब मनुष्य के सामने बहुत रूकावट हैं ।

(ख) अब मनुष्य के सामने कोई रूकावट नहीं है ।

(ग) अब मनुष्य का ज्ञान बढ़ गया है।

(घ) अब मनुष्य ने प्रगति कर ली है।

(3) मानव द्वारा किए गए वैज्ञानिक प्रगति के अद्भुत विकास कवि को खुशी नहीं दे रहे हैं, क्यों ?

(क) क्योंकि उसने प्रकृति को बदल दिया है ।

(ख) क्योंकि उसके मस्तिष्क का विकास हो गया है ।

(ग) क्योंकि उसके जीवन मूल्यों - में गिरावट आ गई है ।

(घ) क्योंकि उसने प्रकृति को नया कर दिया है ।

(4) पवन का ताप किसके आदेश पर चढ़ता और उतरता है ?

(क) प्रकृति के

(ख) दुनिया के

(ग) मनुष्य के

(घ) नदियों के

(5) 'अपूर्व' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग है -

(क) अ

(ख) आ

(ग) पूर्व

(घ) पू

उत्तर - 1. (क) 2. (ख) 3. (क) 4. (ग) 5. (क)

2. नीचे लिखे अपठित काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के सही उत्तर चुनकर लिखिए -

तुम भारत, हम भारतीय हैं, तुम माता, हम बेटे,
किसकी हिम्मत है कि तुम्हें दुष्टता-दृष्टि से देखे |
ओ माता, तुम एक अरब से अधिक भुजाओं वाली,
सबकी रक्षा में तुम सक्षम, हो अदम्य बलशाली |
भाषा, वेश, प्रदेश भिन्न हैं, फिर भी भाई-भाई,
भारत की साझी संस्कृति में पलते भारतवासी |
सुदिनों में हम एक साथ हँसते, गाते, सोते हैं,
दुर्दिन में भी साथ-साथ जागते, पौरुष धोते हैं |
तुम हो शस्य-श्यामला, खेतों में तुम लहराती हो,
प्रकृति प्राणमयी, साम-गानमयी, तुम न किसे भाती हो |
तुम न अगर होती तो धरती वसुधा क्यों कहलाती ?
गंगा कहाँ बहा करती, गीता क्यों गाई जाती ?

1. साझी संस्कृति का क्या अर्थ है ?
   (क) अदम्य बलशाली संस्कृति
   (ख) भाषा, वेश, प्रदेश भिन्न होते हुए भी एक होना
   (ग) प्राचीन संस्कृति
   (घ) अभिजात्यवर्ग की संस्कृति

2. भारत को अदम्य बलशाली क्यों कहा गया है ?
   (क) भिन्न-भिन्न राज्य हैं
   (ख) भाषा, वेश, प्रदेश भिन्न हैं
   (ग) एक अरब से अधिक भुजाओं की ताकत है
   (घ) इनमें से कोई नहीं

3. 'तुम एक अरब से अधिक भुजाओं वाली' पंक्ति का क्या अर्थ है ?

(क) शस्य-श्यामला

(ख) प्रकृति प्राणमयी

(ग) साझी संस्कृति

(घ) इनमें से कोई नहीं

4. सुख-दुःख के दिनों में भारतीयों का परस्पर सहयोग कैसा होता है ?

(क) कोई सहयोग नहीं रहता

(ख) सभी अपना-अपना कार्य करते हैं

(ग) सब की विचारधारा भिन्न है

(घ) मिल-जुलकर रहते हैं

5. कविता में किसका वर्णन किया गया है ?

(क) गंगा का

(ख) प्रकृति का

(ग) भारत का

(घ) संस्कृति का

उत्तर - 1. (ख) 2. (ग) 3. (घ) 4. (घ) 5. (ग)

3. नीचे लिखे अपठित काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के सही उत्तर चुनकर लिखिए -

कुछ भी बन बस कायर मत बन ।
ठोकर मार, पटक मत माथा
तेरी राह रोकते पाहन
कुछ भी बन बस कायर मत बन ।
ले-देकर जीना क्या जीना ?
कब तक गम के आँसू पीना ?
मानवता ने तुझको सींचा
बहा युगों तक खून पसीना ।
कुछ न करेगा ? किया करेगा
रे मनुष्य बस कातर क्रंदन ?
अर्पण कर सर्वस्व मनुज को
कर न दुष्ट को आत्म समर्पण
कुछ भी बन बस कायर मत बन ।

1. कवि क्या बनने की प्रेरणा दे रहा है ?

(क) गम के आँसू पीने की (ख) आत्मसमर्पण की

(ग) रुकावटों को ठोकर मारने की (घ) कायर न बनने की

2. कवि के अनुसार किस प्रकार का जीवन व्यर्थ है ?

(क) कुछ भी बनकर जीना (ख) समझौतावादी

(ग) खून पसीना बहाकर (घ) मनुष्य को सर्वस्व अर्पित करके

3. 'कायर' से तात्पर्य है -

(क) डरपोक (ख) कातर (ग) समझौतावादी (घ) दुष्ट

4. 'पाहन' शब्द का पर्यायवाची है-

(क) मेहमान (ख) पैर (ग) पर्वत (घ) पत्थर

5. 'कुछ भी बन बस कायर मत बन' कवि ने ऐसा क्यों कहा है ?

(क) कुछ भी बनना मुश्किल है (ख) कायर मनुष्य अच्छा नहीं होता

(ग) कुछ भी बनना बहुत आसान है (घ) कायर मनुष्य का जीवन व्यर्थ है

उत्तर - 1. (घ) 2. (ख) 3. (क) 4. (घ) 5. (घ)

4. नीचे लिखे अपठित काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के सही उत्तर चुनकर लिखिए -

"मुझको शक्ति देना
कुछ अच्छा करने की
सबका दुख हरने की
हर फूल खिलाने की
हर शूल हटाने की
मुझको शक्ति देना
हरियाली ले आऊँ
खुशहाली दे पाऊँ
नेह नीर बरसाऊँ
धरती को सरसाऊँ
मुझको देना शक्ति
मैं सबकी पीर हरूँ
आँधी में धीर धरूँ
पापों से सदा डरूँ
जीवन में नया करूँ
मुझको शक्ति देना
नन्हीं पौध लगाऊँ
सींच-सींच हरषाऊँ
अनजाने आँगन को

उपवन-सा महकाऊँ
मुझको शक्ति देना
हर मुखड़ा दमक उठे
आँखें सब चमक उठें
अधर सभी मुस्काएँ
मीठे गीत सुनाएँ।"

1. कवि किस प्रकार की शक्ति चाहता है ?

(क) प्रतिष्ठा प्राप्त करने की (ख) विप्लव मचाने की

(ग) कुछ अच्छा काम करके सबका दुख दूर करने की (घ) आराम करने की

2. 'हर फूल खिलाने की-हर शूल हटाने की' - पंक्ति में आए फूल और शूल से क्या तात्पर्य है ?

(क) अच्छे काम करना और मार्ग में आई बाधाएँ दूर करना

(ख) फूल और काँटे

(ग) कोमलता और कठोरता

(घ) मुरझाए हुए फूलों को खिलाना

3. "आँधी में धीर धरूँ" का क्या भाव है ?

(क) जीवन में आनेवाली मुसीबतों का धैर्यपूर्वक सामना करूँ

(ख) आँधी आने पर शांत रहूँ

(ग) आँधी का धैर्यपूर्वक सामना करूँ

(घ) आँधी आने पर धैर्य रखूँ

4. "आँखें सब चमक उठें" का भाव है -

(क) सबकी आँखें जीवन की ख़ुशियों से चमक उठें

(ख) आँखें कुछ पाने के लिए चमक उठें

(ग) सबकी आँखें रोशनी से जगमगा उठें

(घ) आँखें चकाचौंध से चमक उठें

5. पद्यांश में प्रयुक्त **"बागीचा"** का पर्यायवाची शब्द खोजकर लिखिए ।

(क) मुखड़ा

(ख) उपवन

(ग) नेह

(घ) सरसाऊँ

उत्तर - 1. (ग) 2. (क) 3. (क) 4. (क) 5. (ख)

5. नीचे लिखे अपठित काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के सही उत्तर चुनकर लिखिए

कठिन ग्रीष्म की दोपहरी में हरी दूब पर लेटी |
थकी खेत में घास काट कर वह किसान की बेटी ||
उपजाती है अन्न खेत में कठिन परिश्रम करके |
सोता रहता गाँव किन्तु वह चल देती है तड़के ||
मुँह पर है मुसकान किन्तु माथे पर तरल पसीना |
वह सिखलाती है इस जग को अपने बल पर जीना |
रंगे नहीं नाखून, न है ओठों पर गहरी लाली
बिता चुकी वह इसी खेत में मधुर उमरिया बाली |
ऊपर है रसाल की छाया नीचे दूब हरी है |
लगता जैसे तरु के नीचे कविता सुप्त पड़ी है ||
पृथ्वी बोल रही-देखो, यह ही है मेरी बेटी |
मेरी सेवा करके थक कर मेरे ऊपर लेटी ||

1. किसान की बेटी का दोपहरी में हरी घास पर लेटने का उद्देश्य है -
   (क) हरी घास का आनंद ग्रहण करना
   (ख) श्रमजन्य थकावट दूर करना
   (ग) दोपहर में सोने का
   (घ) और अधिक पसीना बहाने का
2. मुँह पर मुसकान किन्तु माथे पर तरल पसीना' का अभिप्राय है -
   (क) प्रसन्नचित्त और परिश्रमी है
   (ख) संतोषी किन्तु कमजोर है
   (ग) धैर्यवान है पर कार्यकुशल नहीं है
   (घ) हृदय से कोमल शरीर से बलिष्ट है
3. "लगती है जैसे तरु के नीचे कविता सुप्त पड़ी है" पंक्ति में अलंकार है -
   (क) यमक
   (ख) उपमा
   (ग) रूपक
   (घ) उत्प्रेक्षा
4. किसान की बेटी प्रतीक नहीं है ?
   (क) परिश्रम की
   (ख) स्वावलंबन की
   (ग) बनावट की
   (घ) सीधेपन की

5. किसान की बेटी के प्रति पृथ्वी का व्यवहार है -

(क) माँ जैसा

(ख) मालकिन जैसा

(ग) पड़ोसिन जैसा

(घ) सामान्य मनुष्य जैसा

उत्तर - 1. (ख) 2. (क) 3. (घ) 4. (ग) 5. (क)

2. व्यावहारिक व्याकरण

(क) पद परिचय

प्रश्न 1. <u>वाह</u> ! उपवन में सुन्दर फूल खिले हैं | रेखांकित पद का परिचय है ?

(क) अव्यय, विस्मयादिबोधक, प्रश्नबोधक

(ख) अव्यय, विस्मयादिबोधक, व्यंग्यबोधक

(ग) अव्यय, विस्मयादिबोधक, हर्षबोधक

(घ) अव्यय, विस्मयादिबोधक, घृणाबोधक

उत्तर- (ग) अव्यय, विस्मयादिबोधक, हर्षबोधक

प्रश्न 2. <u>आजकल</u> प्रदूषण तेजी से फ़ैल रहा है | रेखांकित पद का परिचय है ?

(क) अव्यय, क्रियाविशेषण, कालवाचक, 'फैलना' क्रिया की विशेषता बता रहा है|

(ख) अव्यय, क्रियाविशेषण, रीतिवाचक 'फैलना' क्रिया की विशेषता बता रहा है|

(ग) विशेषण, गुणवाचक, प्रदूषण की विशेषता बता रहा है|

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर- (क) अव्यय क्रिया विशेषण कालवाचक 'फैलाना' क्रिया की विशेषता बता रहा है|

प्रश्न 3. <u>परिश्रमी</u> छात्र सदा सफल होते हैं | रेखांकित पद का पद-परिचय है -

(क) विशेषण स्थानवाचक, पुल्लिंग , बहुवचन , छात्रविशेष्य

(ख) विशेषण गुणवाचक पुल्लिंग बहुवचन छात्र विशेष्य

(ग) सर्वनाम, निश्चयवाचक, पुल्लिंग , बहुवचन, छात्र विशेष्य

(घ) संज्ञा व्यक्तिवाचक,पुल्लिंग , बहुवचन, छात्र विशेष्य

उत्तर- (ख) विशेषण गुणवाचक पुल्लिंग बहुवचन छात्र विशेष्य

प्रश्न 4. यह बहुत <u>मनोरंजक</u> कहानी है | रेखांकित पद का परिचय है ?